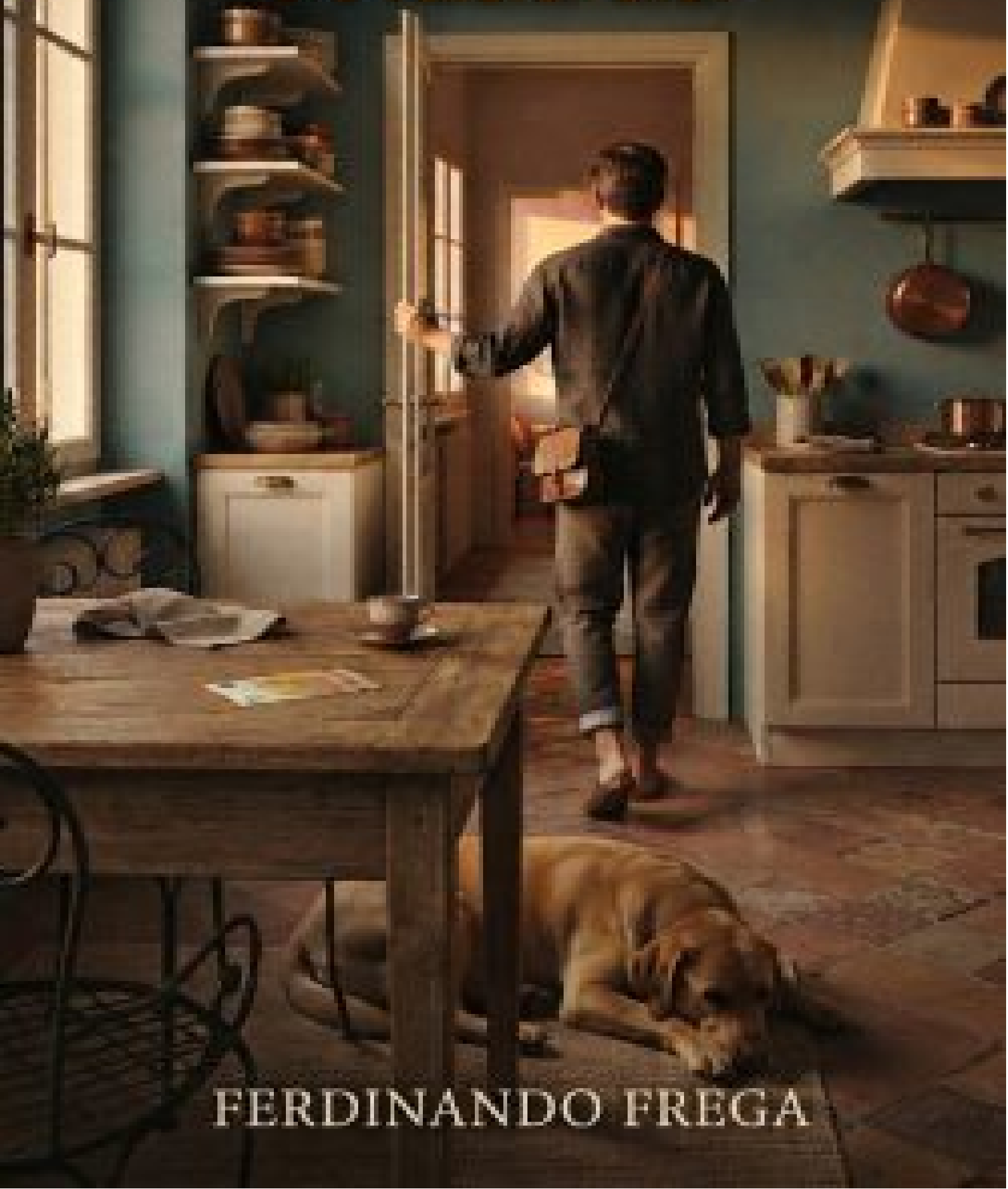


THE NOTHING I NEEDED



FERDINANDO FREGA

वह शून्य जिसकी मुझे ज़रूरत थी

वह शून्य जिसकी मुझे ज़रूरत थी

मेरी पत्नी Elisabetta ने अपनी बेटी Giorgia के साथ, और साथ ही उसके भाई Michele और उसकी पत्नी Cinzia के साथ छुट्टियों पर जाने का फ़ैसला किया।

उनकी मंज़िल थी सिसिली में एक चचेरे भाई का घर, जहाँ वे रोज़मर्रा के तनाव से उबरते हुए पाँच दिन बिताने वाले थे।

मुझे अकेला छोड़ने से पहले — मेरे अमेरिकी लैब्राडोर की देखभाल की ज़िम्मेदारी अलग से, जिसकी कभी नेपल्स में एक 'गर्लफ्रेंड' थी और जिसने वहाँ का स्थानीय कुत्ता-लहजा भी सीख लिया था — उन्होंने पक्का किया कि मुझे बता दिया जाए कि भंडार-गृह पूरी तरह भरा हुआ है। उन्होंने मुझे रोज़ के अतिरिक्त ख़र्चों के लिए पचास यूरो भी दिए और साफ़ कर दिया कि जब वे लौटेंगी, तो उन्हें घर एकदम व्यवस्थित मिलना चाहिए, किसी घरेलू तबाही-क्षेत्र जैसा नहीं।

हर दिन वे फ़ोन करतीं। दोनों को कुत्ते की चिंता रहती। उसने खाया या नहीं? उसने पर्याप्त पानी पिया या नहीं? उसे टहलने बाहर ले जाया गया या नहीं? उसने अपना काम निपटाया या नहीं? उसे कोई साथ मिला या नहीं?

किसी मोड़ पर मैंने सुझाव दिया कि वे सीधे उसी को फ़ोन कर लें और उसे खुद अपने सवालों के जवाब देने दें, शिकायतों समेत।

जहाँ तक मेरी बात है, मुझे बस कभी-कभार अपनी पत्नी का एक शांत-सा सवाल मिलता।

'तुमने खाना खाया?'

और मैं भी उतनी ही शांति से जवाब देता।

'हाँ, मेरी जान।'

अहाहाहाहाहाहाहाहा।

फिर उनके लौटने का दिन आ गया।

बेहद उत्सुक, वे घर में दाखिल हुईं।

सब कुछ बेदाग़ था। रसोई एकदम चमक रही थी। एक भी बर्तन अपनी जगह से इधर-उधर नहीं था।

वे इतनी हैरान थीं कि दोबारा बाहर निकल आईं, गलियारे में खड़ी हो गईं, और सोचने लगीं कि कहीं वे ग़लत फ़्लैट में तो नहीं आ गईं।

मेरी साली, जो एक वरिष्ठ Carabinieri अधिकारी की बेटी थी, ने 'अपराध-स्थल' का बारीकी से मुआयना किया और मुझे बधाई दी, साथ ही यह सवाल भी उठाया कि आखिर ऐसा हुआ कैसे।

ठीक जब सबको लगा कि विशेष प्रभाव ख़त्म हो चुके हैं, हम रसोई की मेज़ के इर्द-गिर्द जमा हुए और उन्होंने मुझे हाथ में वे पचास यूरो लिए आते देखा, उन्हें लौटाने को तैयार।

उनकी नज़रें आपस में मिलीं। उनकी आँखों ने बिना एक भी शब्द के पूरी बातचीत कर ली।

सवाल फ़ौरन आया।

'तुमने खाना नहीं खाया?'

और मैंने जवाब दिया:

'खाया, शुक्रिया। दिन में कम-से-कम तीन बार। पर मुझे पता था कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए था। जीने के लिए मेरे लिए शून्य ही काफ़ी था। यही वह सब कुछ था जिसकी मुझे ज़रूरत थी।'

मैं मुस्कुराया और अकेला टहलने निकल गया।

क्योंकि सफलता को कभी बाँटना नहीं चाहिए।

यह आइसक्रीम जैसी है। हर कोई उसका स्वाद अपनी ही जुबान पर पहचानता है, भले ही वह स्वाद सबके लिए एक-सा ही क्यों न हो।

Ferdinando